Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

ROM

रोमियों 1:1–17, रोमियों 1:18–32, रोमियों 2:1–16, रोमियों 2:17–29, रोमियों 3:1–20, रोमियों 3:21–31, रोमियों 4:1–25, रोमियों 5:1–11, रोमियों 5:12–21, रोमियों 6:1–23, रोमियों 7:1–25, रोमियों 8:1–17, रोमियों 8:18–25, रोमियों 8:26–39, रोमियों 9:1–18, रोमियों 9:19–33, रोमियों 10:1–21, रोमियों 11:1–24, रोमियों 11:25–36, रोमियों 12:1–21, रोमियों 13:1–7, रोमियों 13:8–14, रोमियों 14:1–23, रोमियों 15:1–16, रोमियों 15:17–33, रोमियों 16:1–15, रोमियों 16:16–27

रोमियों 1:1–17

पौलुस रोम शहर में रहनेवाले विश्वासियों से मिलने के लिए बहुत उत्सुक था। उसने कई बार उनसे मिलने का प्रयास किया था, परन्तु हमेशा जाने से रोका गया।

इसलिए पौलुस ने उन्हें सुसमाचार के साथ प्रोत्साहित करने के लिए पत्र लिखा। पौलुस प्रेरित था। उसने प्रभु यीशु मसीह और मसीहा की सेवा की।

इसका अर्थ है कि उसने यीशु के उदाहरण का अनुसरण किया, जो सेवा करने वाले अगुवे थे। पौलुस का काम यहूदियों और अन्यजातियों, दोनों को सुसमाचार प्रचार सुनाना था।

यीशु यहूदी थे, और परमेश्वर ने उनके विषय में यहूदी पवित्रशास्त्रों में प्रतिज्ञाएँ की थी। पवित्रशास्त्र परमेश्वर का वचन हैं। परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जीवित करके इन प्रतिज्ञाओं को पूरा किया।

यीशु के पुनरुत्थान ने यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को बचाने के लिए परमेश्वर की सामर्थ को दिखाया। परमेश्वर के पास यीशु के बलिदान के माध्यम से सभी को बचाने की सामर्थ है। यह सुसमाचार है!

जब लोग इस सुसमाचार पर विश्वास करते हैं, तो यह दर्शाता है कि उन्हें परमेश्वर में विश्वास है। विश्वास रखने का अर्थ है परमेश्वर के प्रति समर्पित होना और उन पर भरोसा करना। जिनके पास विश्वास होता है, वे परमेश्वर के साथ सही बनाए जाते हैं।

रोमियों 1:18–32

परमेश्वर सभी चीजों के निर्माता हैं। संसार जो उन्होंने बनाया है वह उनकी सामर्थ्य और महिमा का प्रमाण है।

इससे मनुष्यों को केवल परमेश्वर की आराधना करने और उनका धन्यवाद करने के लिए प्रेरित होना करना चाहिए। फिर भी मनुष्य ऐसा करना नहीं चुनते हैं। वे अपनी आशा और विश्वास सृजित वस्तुओं में रखते हैं। वे यह मानने से इनकार करते हैं कि परमेश्वर अच्छे है। परमेश्वर कौन है, इस बात को नकार कर वे झूठ पर विश्वास करना चुनते हैं।

यह मनुष्यों को ऐसे तरीकों से जीने के लिए प्रेरित करता है जो हानिकारक हैं। वे पाप से भरे होते हैं। वे उस व्यवस्था के विरुद्ध जाते हैं जो परमेश्वर ने अपने संसार के लिए योजना बनाई थी। वे स्वयं को, अन्य लोगों को और बाकी सृष्टि को नुकसान पहुँचाते हैं।

रोमियों 2:1–16

परमेश्वर ने यहूदी लोगों को व्यवस्था में अपने निर्देश दिये। पौलुस मूसा की व्यवस्था के विषय में बात कर रहा थे। इस कारण, कुछ यहूदी सोचते थे कि वे अन्यजातियों से बेहतर है। उन्होंने अन्यजातियों का अनुचित तरीके से न्याय किया।

अन्यजातियों को व्यवस्था नहीं दी गई थी। फिर भी, कुछ अन्यजाति व्यवस्था में वर्णित परमेश्वर के तरीकों के अनुसार जीते थे। और कुछ यहूदी जो मूसा की व्यवस्था जानते थे, उसका पालन नहीं करते थे। पौलुस ने स्पष्ट किया कि लोगों को एक-दूसरे का न्याय नहीं करना चाहिए। केवल परमेश्वर ही लोगों का न्याय सही ढंग से कर सकते हैं। उनका न्याय इस पर आधारित होगा कि उन्होंने अपना जीवन कैसे जिया हैं।

यीशु लोगों के सोचने के तरीके का भी न्याय करेंगे। कुछ लोग परमेश्वर का आदर करते हैं और अच्छे काम करते हैं जिससे दूसरों को सहायता मिलती है। यह दिखाता है कि उनका यीशु में विश्वास है। इन लोगों को अनंत जीवन प्राप्त होगा।

अन्य लोग परमेश्वर को नकार देते हैं और केवल अपने बारे में सोचते हैं। इन लोगों को पाप और बुराई के खिलाफ परमेश्वर का क्रोध मिलेगा। परमेश्वर लोगों के प्रति बहुत दयालु हैं और चाहते हैं कि लोग अपने पापों से मन फिरायें। जब लोग पश्चाताप करते हैं, तो वे परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं कि वे उन्हें ऐसा जीवन देंगे जिसे मृत्यु नष्ट नहीं कर सकती।

रोमियों 2:17–29

पौलुस के समय में बहुत से यहूदी सोचते थे कि इस्राएल के लोग विशेष हैं। वे सोचते थे कि वे अन्य लोगों से बेहतर हैं। वे ऐसा इसलिए मानते थे क्योंकि परमेश्वर ने सिनै पर्वत की वाचा याकूब के वंशजों के साथ की थी।

परन्तु यहूदी, वाचा के प्रति वफादार नहीं थे। उन्होंने दस आज्ञाओं और मूसा की व्यवस्था का वफादारी से पालन नहीं किया था। परिणामस्वरूप, उन्होंने दूसरे लोगों के साथ परमेश्वर का प्रकाश साझा नहीं किया था। पौलुस ने कहा कि यहूदी दूसरों से बेहतर नहीं थे।

लिखित व्यवस्था और खतना किया हुआ शरीर किसी को परमेश्वर के लिए स्वीकार्य नहीं बनाते हैं। जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि लोग अपने हृदयों में परमेश्वर पर विश्वास करें। पौलुस का मतलब यही था जब उसने लोगों के हृदयों के खतना की बात की। परमेश्वर ऐसे लोगों की खोज में हैं जो अपने हृदयों को बदलने के लिए उन पर विश्वास करते हैं।

पवित्र आत्मा उन्हें वह सामर्थ देता है जैसा परमेश्वर चाहता है कि वे जीएँ। परमेश्वर इससे बहुत प्रसन्न होते हैं।

रोमियों 3:1–20

यहूदियों को परमेश्वर के वचनों और वाचाओं का मूल्यवान वरदान दिया गया था। परमेश्वर सीनै पर्वत की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य थे, परन्तु यहूदी नहीं थे।

क्या परमेश्वर की योजना इसलिए रोक दी गई क्योंकि परमेश्वर के लोग विश्वासयोग्य नहीं रहे? नहीं। पौलुस ने समझाया कि परमेश्वर हमेशा विश्वासयोग्य हैं और उन पर हमेशा भरोसा किया जा सकता है।

जब मनुष्य बुरे काम करते हैं, तो यह किसी भी प्रकार से परमेश्वर की भलाई को नहीं बदलता। सीनै पर्वत की वाचा होने से यहूदियों को पाप पर कोई विशेष लाभ नहीं मिलता। यहूदी और अन्यजाति दोनों ही पाप की सामर्थ के अधीन हैं।

मूसा की व्यवस्था ने यहूदियों को यह समझने में मदद की कि वे किस प्रकार पाप के दोषी हैं। कोई भी अपने आप पाप की सामर्थ से मुक्त नहीं हो सकता।

रोमियों 3:21–31

जब लोग पाप करते हैं, तो वे परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध जाते हैं। मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा मानने का प्रयास करके अपने जीवन में पाप की शक्ति को नहीं रोक सकते। इसका मतलब है कि परमेश्वर के साथ उनका रिश्ता टूट गया है।

परमेश्वर लोगों के साथ टूटा हुआ रिश्ता नहीं रखना चाहते। पौलुस ने दिखाया कि परमेश्वर ने पाप की समस्या से कैसे निपटा। यीशु ने पाप से निपटने और लोगों को उसकी शक्ति से मुक्त करने के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। यह परमेश्वर की दया को दर्शाता है।

वे सभी लोग जो विश्वास करते हैं कि यीशु ने उनके लिए यह किया, वे परमेश्वर के साथ सही ठहराए जाते हैं। यीशु पर विश्वास रखने से वे पाप के दास होने से बचाए जाते हैं। परमेश्वर उन लोगों के साथ जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे उन्होंने पाप नहीं किया हो। यह यहूदियों और अन्य जातियों के लिए सत्य है।

रोमियों 4:1–25

यहूदियों को पता था कि परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वाचा बाँधी थी। परमेश्वर ने उन्हें रहने के लिए देश और बहुत बड़ा परिवार देने का वादा किया था।

अब्राहम ने इस वादे को पाने के लिए कुछ भी नहीं किया था। अब्राहम और सारा संतान उत्पन्न करने के लिए बहुत बूढ़े थे। फिर भी, अब्राहम को विश्वास था कि परमेश्वर अपना वादा पूरा करेंगे।

उसे परमेश्वर पर आशा थी और विश्वास था कि परमेश्वर जो कुछ भी करना चाहें, कर सकते हैं। परमेश्वर अब्राहम के विश्वास से बहुत प्रसन्न हुए। परमेश्वर ने अब्राहम को अपने साथ सही बना दिया।

परमेश्वर के साथ सही संबंध में होना, आशीष है। यह आशीष उन सभी के लिए है जिनके पास अब्राहम के समान विश्वास है। जिन लोगों के पास अब्राहम के विश्वास जैसा विश्वास है, वे भी अब्राहम के संतान हैं। वे उनकी संतान हैं, भले ही वे उनके परिवार की वंशावली से न हों।

पौलुस ने समझाया कि अब्राहम का विश्वास यीशु से कैसे जुड़ा है। जिस परमेश्वर पर अब्राहम ने विश्वास किया, वही परमेश्वर हैं जिन्होंने यीशु को मृतकों में से जिलाया। जो कोई भी यीशु पर विश्वास करता है, वह परमेश्वर के साथ सही ठहराया जाता है।

रोमियों 5:1–11

पौलुस ने उन आशीषों का वर्णन किया जो परमेश्वर के लोगों को यीशु के माध्यम से मिलती हैं। वे उनका अनुग्रह प्राप्त करते हैं और परमेश्वर के साथ शांति में रहते हैं।

वे आनंद और आशा से भरे हुए हैं क्योंकि परमेश्वर अपनी महिमा उनके साथ साझा करेंगे। वे तब भी आनंदित हो सकते हैं जब वे कष्टों का सामना करते हैं। उनके कष्ट उनके जीवन

में शक्ति और चरित्र जैसी अच्छी चीजें उत्पन्न करते हैं। यह आशा की ओर ले जाता है।

परमेश्वर का प्रेम वह है जिसकी लोगों को वास्तव में आवश्यकता होती है और जिसकी वे आशा करते हैं। परमेश्वर अपना प्रेम मुफ्त में देते हैं। पवित्र आत्मा लोगों के हृदयों को परमेश्वर के प्रेम से भर देते हैं।

क्रूस पर यीशु की मृत्यु ने दिखाया कि परमेश्वर का प्रेम लोगों के प्रति कितना गहरा है। यीशु ने लोगों के लिए अपना प्राण दे दिया। उन्होंने यह अधर्मी लोगों के लिए भी किया। उन्होंने यह तब किया जब वे पाप करने और परमेश्वर का विरोध करने में लगे हुए थे।

परिणामस्वरूप विश्वासी यह भरोसा कर सकते हैं कि वे न्याय के दिन बचाए जाएँगे। वे पाप और बुराई के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध से बचाए जाएँगे।

रोमियों 5:12–21

आदम पहला मनुष्य था और सभी लोगों के लिए आदर्श था। आदम ने पाप किया। इससे संसार में मृत्यु आई। पाप और मृत्यु परमेश्वर के संसार और लोगों पर शासन करते हैं। मनुष्य पाप करते हैं और मनुष्य मरते हैं।

यीशु पहले मनुष्य हैं जो पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहे। उन्होंने पाप नहीं किया। वे लोगों के प्रति प्रेम के कारण मरने के लिए तैयार थे। परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से जीवित किया। इससे ऐसा जीवन मिला जिसे मृत्यु नष्ट नहीं कर सकती और मृत्यु को संसार पर शासन करने से रोक दिया।

आदम लोगों के जीवन जीने का पहला आदर्श था। यीशु नया और अंतिम आदर्श हैं। इसका मतलब है कि उन्होंने लोगों को दिखाया कि कैसे परमेश्वर के लिए जीना है। जो लोग यीशु पर भरोसा करते हैं, उन्हें परमेश्वर की कृपा का वरदान मिलता है। परमेश्वर की कृपा पाप से होने वाली सभी हानि से बड़ी और मजबूत है। जो लोग परमेश्वर के साथ सही बनाए जाते हैं, वे अनुग्रह द्वारा शासित होते हैं, पाप द्वारा नहीं। वे परमेश्वर के राज्य में यीशु के साथ शासन करेंगे।

रोमियों 6:1–23

लोगों को पाप करते रहने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह का बहाना नहीं बनाना चाहिए। यीशु लोगों को पाप और मृत्यु की गुलामी से बचाते हैं।

इस बात के संकेत के रूप में कि वे बचाए गए हैं, विश्वासियों को बपतिस्मा दिया जाता है। पानी के अन्दर जाना यीशु के साथ मरने और गाड़े जाने के समान है। पानी से बाहर आना मसीह के साथ मृतकों में से जी उठने के समान है। विश्वासियों को नया जीवन जीने के लिए जी उठाया जाता है।

विश्वासियों को जो नई स्वतंत्रता प्राप्त है, वह इस बात पर आधारित है कि वे अपने पुराने जीवन के लिए मर चुके हैं। वे पहले पाप के अधीन थे। परन्तु उनके सभी पुराने तरीके मसीह के साथ क्रूस पर मारे गए। वे बदल गए हैं और पाप अब उन पर शासन नहीं करता। वे अब परमेश्वर के शासन के अधीन हैं।

पौलुस ने इसे पाप के बजाय परमेश्वर के दास होने के रूप में वर्णित किया। परमेश्वर के अनुयायी उनकी सेवा करने की इच्छा रखते हैं। वे अपनी स्वतंत्रता का उपयोग अपने प्रभु यीशु का अनुसरण करने के लिए करते हैं। वे अब पाप और मृत्यु की सेवा नहीं करना चाहते। मसीह की सेवा करके, उनके अनुयायियों को पवित्र जीवन जीने की आशीष मिलती है।

रोमियों 7:1–25

जब यीशु मरे, तो ऐसा लगा जैसे उनके अनुयायी भी मर गए हों। उनके शरीर नहीं मरे थे, परन्तु वे पाप के लिए मर गए थे। जब लोग पाप के लिए मर जाते हैं, तो इसका मतलब है कि पाप अब उन्हें नियंत्रित नहीं करता। वे यीशु के हैं और परमेश्वर के लिए जीते हैं।

पत्र के इस भाग में पौलुस अपने बारे में बहुत कुछ कहते हुए प्रतीत होते है।। उसने कई बार 'मैं' शब्द का उपयोग किया। वह केवल अपने बारे में ही बात नहीं कर रहे थे। वह मूसा की व्यवस्था के साथ इस्राएल के इतिहास के बारे में भी बात कर रहे थे। इस्राएल के लोगों को व्यवस्था दी गई थी। व्यवस्था ने लोगों को दिखाया कि वे पाप के गुलाम के रूप में फँसे हुए हैं।

व्यवस्था अच्छी और सत्य है। यह परमेश्वर का वरदान है। परन्तु इसमें वह भलाई लाने की कोई शक्ति नहीं है जो परमेश्वर चाहते हैं कि लोग करें। इसके लिए लोगों को पूरी तरह से बदलना होगा। जब यीशु मसीह लोगों को बचाते हैं तो वे पूरी तरह से बदल जाते हैं। पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों को पाप को नकारने की सामर्थ देते है।

रोमियों 8:1–17

पौलुस ने दो प्रकार की व्यवस्थाओं का वर्णन किया। एक पाप की व्यवस्था थी। वह इस विषय में बात कर रहे थे कि पाप कैसे लोगों को नियंत्रित करता है। जब लोग पाप करते हैं तो वे परमेश्वर की अवज्ञा करने के दोषी होते हैं। इसके लिए उनका न्याय किया जाता है। न्याय यह है कि सभी मनुष्य मर जाते हैं।

पौलुस ने जिस अन्य प्रकार की व्यवस्था का वर्णन किया, वह पवित्र आत्मा की व्यवस्था थी। वह इस विषय में बात कर रहा

था कि मसीह के अनुयायी पाप की शक्ति से मुक्त हैं। परमेश्वर के पुत्र मानव रूप में पृथ्वी पर आए। इस कारण से वे पापबलि बन सके। यीशु के बलिदान ने पाप के लिए मूल्य चुकाया। इसका अर्थ है कि यीशु ने मनुष्यों पर पाप की शक्ति को तोड़ दिया। विश्वासियों को अब परमेश्वर की आज्ञा न मानने के लिए दोषी नहीं ठहराया जाता।

पवित्र आत्मा उन्हें ऐसे सोचने और जीने में मदद करता है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। उनके शरीर के मर जाने के बाद भी उनके पास जीवन होगा क्योंकि परमेश्वर की आत्मा उनमें है। जो लोग आत्मा की सामर्थ के अधीन रहते हैं, वे परमेश्वर के परिवार का हिस्सा हैं। उन्हे परमेश्वर के बच्चों के रूप में अपनाया गया है। वे परमेश्वर पर अपने पिता के रूप में भरोसा करते हैं और उन्हें अब्बा कहते हैं।

पवित्र आत्मा उन्हें परमेश्वर के लिए जीने की सामर्थ देते है। यीशु का अनुसरण करने के कारण उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है, तो वह उन्हें आगे बढ़ते रहने की सामर्थ देते है। एक दिन यीशु अपनी महिमा सभी विश्वासियों के साथ साझा करेंगे।

रोमियों 8:18–25

पौलुस ने भविष्य में आने वाली महिमा के विषय में बताया।

संसार फिर से वैसा ही होगा जैसा परमेश्वर ने इसे बनाया था।

विश्वासियों के जो शरीर मर चुके हैं, उन्हें हमेशा के लिए जीवित रहने के लिए जिलाया जाएगा।

जो कुछ भी परमेश्वर ने रचा है, वह मृत्यु और कष्ट से मुक्त हो जाएगी।

सारा संसार बुराई के कारण पीड़ित है।

पौलुस ने इसे दर्द और कराहने जैसा वर्णित किया है।

विश्वासी और बाकी सृष्टि उस भविष्य की महिमा की लालसा करते हैं जिसकी परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है।

रोमियों 8:26–39

परमेश्वर पिता, पुत्र यीशु और पवित्र आत्मा मिलकर लोगों को बचाने का कार्य करते हैं।

पवित्र आत्मा विश्वासियों के लिए प्रार्थना करते है। आत्मा की प्रार्थनाएँ उन शब्दों से कहीं अधिक हैं जो मानवीय शब्दों में कहे जा सकते हैं। आत्मा जानता है कि परमेश्वर अपने बच्चों के लिए क्या चाहते हैं।

यीशु भी विश्वासियों के लिए प्रार्थना करते हैं। वे अपनी महिमा अपने सभी भाइयों और बहनों के साथ साझा करते हैं।

परमेश्वर चाहते हैं कि लोग जानें कि वे उनसे कितनी गहराई से प्रेम करते हैं। कुछ भी परमेश्वर को लोगों से प्रेम करने से नहीं रोक सकता। लोग इस बारे में पूरी तरह से आश्वस्त हो सकते हैं।

परमेश्वर ने विश्वासियों के खिलाफ पाप के सभी आरोप हटा दिया हैं। इसलिए पाप उन्हें परमेश्वर के द्वारा प्रेम किए जाने से नहीं रोक सकता। न ही आध्यात्मिक प्राणी जैसे स्वर्गदूत या दुष्ट आध्यात्मिक प्राणी जैसे दुष्टात्मा भी नहीं रोक सकते हैं।

यहाँ तक कि मृत्यु भी परमेश्वर के प्रेम को लोगों तक पहुँचने से नहीं रोक सकती। ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की। यीशु मसीह की विजय की कोई सीमा नहीं है।

कई चीजें विश्वासियों के जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को रोकने की कोशिश करती हैं। परन्तु यीशु की विजय के कारण, विश्वासी उन सभी चीजों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। परमेश्वर का उद्देश्य लोगों को बचाना है ताकि वे यीशु के समान बन सकें।

रोमियों 9:1–18

पौलुस इस्राएल के लोगों का हिस्सा थे। उन्होंने यह स्वीकार करने से इनकार कर दिया कि यीशु परमेश्वर द्वारा भेजे गए मसीहा हैं। पौलुस इस बात से बहुत दुखी थे। वे इस्राएल को यीशु को स्वीकार करने में मदद करने के लिए यीशु का उनके प्रति प्रेम को त्यागने के लिए तैयार थे। परन्तु इससे कोई मदद नहीं मिलती।

परमेश्वर ने इस्राएल को कई उपहार दिए जैसे मंदिर, व्यवस्था और उनकी प्रतिज्ञाएँ। फिर भी इस्राएल में बहुत से लोग यह विश्वास नहीं करते थे कि यीशु मसीह हैं। इसका अर्थ यह नहीं था कि परमेश्वर का वचन और उनकी वाचा असफल हो गई थीं। परमेश्वर विश्वासयोग्य हैं और जो वे कहते हैं वह सत्य है।

परमेश्वर ने अब्राहम के माध्यम से संसार को बचाने की अपनी योजना में कार्य करने के लिए चुना था। परमेश्वर चाहते थे कि अब्राहम कि वंशावली उनकी दया और प्रेम प्राप्त करे। परमेश्वर ने अपनी योजना को अब्राहम के पुत्र इसहाक और इसहाक के पुत्र याकूब के माध्यम से जारी रखा। परन्तु याकूब की वंशावली में होना ही किसी को परमेश्वर की सन्तान नहीं बनाता। वे सभी जो परमेश्वर की दया और प्रेम को स्वीकार करते हैं, वे परमेश्वर की सन्तान हैं।

रोमियों 9:19–33

पौलुस ने भविष्यवक्ताओं के कई शब्दों का उपयोग पुराने नियम में किया। उसने यह बताने के लिए ऐसा किया कि परमेश्वर के लोग कौन हैं।

यशायाह की पुस्तक में की गयी भविष्यवाणियाँ परमेश्वर को कुम्हार के रूप में वर्णित करती हैं। उन्होंने इस्राएल को मिट्टी के समान वर्णित किया। परमेश्वर इस्राएल जाति को आकार देने और बनाने का प्रयास कर रहे थे।

वह चाहते थे कि वे याजकों का राज्य और पवित्र जाति बनें।

यशायाह और होशे की भविष्यवाणियों ने दिखाया कि परमेश्वर की प्रजा में यहूदी और अन्यजाति दोनों शामिल होंगे।

परमेश्वर के लोग इसलिए नहीं चुने जाते क्योंकि वे व्यवस्था जानते हैं। उन्हें इस आधार पर नहीं चुना जाता कि वे किस परिवार से आते हैं। उन्हें इसलिए चुना जाता है क्योंकि वे यीशु पर विश्वास रखते हैं। इससे पता चलता है कि उन्हें परमेश्वर पर भरोसा है। वे स्वयं को परमेश्वर के साथ सही साबित करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। वे उन्हें परमेश्वर के साथ सही करने के लिए यीशु पर भरोसा करते हैं।

रोमियों 10:1–21

पौलुस ने समझाया कि बहुत से यहूदी वास्तव में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहते थे। वे मूसा की व्यवस्था का पालन करके ऐसा करने का प्रयास करते थे। वे सोचते थे कि उनके पास व्यवस्था को पूर्ण रूप से पालन करने की सामर्थ है। वे सोचते थे कि इससे उन्हें परमेश्वर के साथ शांति मिलेगी।

वे यह नहीं समझते थे कि मनुष्यों के पास स्वयं को परमेश्वर के साथ सही साबित करने की सामर्थ नहीं है। केवल परमेश्वर के पास यह सामर्थ है। परमेश्वर लोगों को उनके साथ सही बनाते हैं जब वे उन पर विश्वास करते हैं।

लोग केवल तभी यीशु पर विश्वास कर सकते हैं जब उन्होंने उनके बारे में सुना हो। पौलुस ने सृष्टि के बारे में कुछ दिखाने के लिए भजन संहिता 19 के वचनों का उपयोग किया। सूर्य, चंद्रमा और तारे पृथ्वी पर सभी के लिए इस बात के गवाह हैं कि परमेश्वर कौन हैं। पौलुस ने यह स्पष्ट किया कि यहूदियों ने यीशु के बारे में संदेश सुना था।

रोमियों 11:1–24

पौलुस ने दिखाया कि इस्राएल में हर कोई मसीहा को स्वीकार करने में असफल नहीं हुए थे। पौलुस और बहुत से अन्य यहूदियों को परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त हुआ था और उन्होंने यीशु पर विश्वास किया था।

अन्य यहूदी, विश्वास नहीं करते थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि वे जिद्दी थे और उन्होंने ऐसा नहीं करने का निर्णय लिया। इससे अन्यजातियों को यीशु के बारे में सुनने और परमेश्वर की ओर मुड़ने का अवसर मिला।

पौलुस अन्यजातियों और लोगों के साथ यीशु के विषय में संदेश साझा करते रहना चाहता था। जब अन्यजातियों ने परमेश्वर को जानने की आशीष प्राप्त की, तो इसने बहुत से यहूदियों को ईर्ष्यालु बना दिया। पौलुस चाहता था कि इस्राएल के सभी लोग उन लोगों से ईर्ष्या करें जो परमेश्वर को जानते हैं। पौलुस को आशा थी कि इससे यहूदी यीशु को स्वीकार करने के लिए प्रेरित होंगे।

पौलुस ने यहूदियों और अन्यजातियों की तुलना जैतून के पेड़ों से की। इस्राएल की जाति सुंदर बगीचे में जैतून के पेड़ के समान थी। अन्यजाति विश्वासी जंगल में उगने वाले जैतून के पेड़ के समान थे। इस जंगली जैतून के पेड़ की शाखाएँ यहूदी जैतून के पेड़ से जुड़ी हुई थीं। यहूदी जड़ उन सभी जंगली शाखाओं का समर्थन करती थी जो उससे जुड़ी हुई थीं। यह इस बात की तस्वीर है कि कैसे अन्यजाति परमेश्वर के परिवार में शामिल होते हैं। परमेश्वर ही हैं जो अन्यजाति की शाखाओं को यहूदी पेड़ से जोड़ते हैं।

यहूदी जैतून के पेड़ की कुछ शाखाएँ तोड़ दी गई थीं। वे यहूदी थे जिन्होंने यह स्वीकार करने से इनकार कर दिया कि परमेश्वर यीशु के माध्यम से क्या कर रहे थे। पौलुस को आशा थी कि सभी यहूदी विश्वास करेंगे कि यीशु मसीह हैं। तब परमेश्वर सभी यहूदी शाखाओं को फिर से जैतून के पेड़ पर जोड़ देंगे। पौलुस उस घटना की लालसा करता था।

रोमियों 11:25–36

जब यहूदियों ने यीशु के बारे में सुसमाचार को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, तो यह संदेश अन्यजातियों के साथ साझा किया गया। इसका यह मतलब नहीं था कि परमेश्वर ने यहूदियों की परवाह करना बंद कर दिया। परमेश्वर का अपने लोगों, इस्राएल के प्रति प्रेम सदा बना रहता है।

यहूदी और अन्यजाति दोनों ही परमेश्वर की आज्ञा न मानने के कारण दोषी हैं। फिर भी परमेश्वर दया से परिपूर्ण हैं। वे लोगों को पाप की शक्ति से मुक्त करने के अपने वचन के प्रति विश्वासयोग्य हैं। परमेश्वर की दया ने पौलुस को आश्चर्य से भर दिया। पौलुस ने परमेश्वर की स्तुति को कविता या गीत के रूप में लिखा।

कोई नहीं जानता कि परमेश्वर क्या करेंगे इससे पहले कि वे उसे करें। परमेश्वर ऐसे तरीकों से कार्य करते हैं जो आश्चर्यजनक होते हैं। उनकी बुद्धि अद्भुत है और मनुष्यों की समझ से परे है। पृथ्वी पर हर जीवन परमेश्वर पर निर्भर करता

है। इसलिए सारी महिमा और आदर अब और सदा के लिए उसी का है।

रोमियों 12:1–21

विश्वासी परमेश्वर की दया के लिए आभारी हैं। वे इसे अपने मन और देह से परमेश्वर की सेवा करके दिखाते हैं।

वे उस तरीके से सोचना और कार्य करना बंद कर देते हैं जिसे पौलुस ने इस संसार के जीने के तरीके के बारे में कहा था। वह पापपूर्ण इच्छाओं द्वारा नियंत्रित होने की बात कर रहे थे।

परमेश्वर का प्रेम पूरी तरह से विश्वासियों के सोचने और कार्य करने के तरीके को बदल देता है। वे भाई-बहनों के रूप में मिलकर परमेश्वर की सेवा करते हैं।

परमेश्वर के लोग एक-दूसरे से भिन्न हैं। परन्तु वे सभी यीशु पर भरोसा करते हैं। इस प्रकार से वे एक हो जाते हैं।

पौलुस ने इसे एक शरीर के रूप में वर्णित किया जिसमें कई अलग-अलग अंग होते हैं। यद्यपि अंग अलग-अलग कार्य करते हैं, फिर भी ये एक ही शरीर के अंग हैं।

यीशु के अनुयायियों के पास कई अलग-अलग वरदान हैं। इस कारण वे विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं। परन्तु वे मसीह की देह में एक साथ लाए जाते हैं।

मसीह की देह के रूप में एक साथ रहने का मतलब शांति में रहना है। इसमें विनम्र और ईमानदार होना भी शामिल है।

विश्वासी आशा, आनंद, धैर्य और विश्वास से परिपूर्ण होते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि अन्य लोगों के पास, जो कुछ भी चाहिए वह हो और वे दूसरों के साथ साझा करते हैं। इसमें उनका आनंद या दुख साझा करना भी शामिल है।

विश्वासी उन लोगों के साथ भी भलाई करते हैं जो हानि पहुँचाते हैं। विश्वासी परमेश्वर पर भरोसा करते हैं कि वे बुराई करने वालों के विरुद्ध न्याय करेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि केवल परमेश्वर का प्रेम ही बुराई की ताकत को रोकने के लिए पर्याप्त सामर्थी है।

रोमियों 13:1–7

पौलुस ने समझाया कि परमेश्वर ने शासकों को नियुक्त किया है ताकि व्यवस्था और न्याय सुनिश्चित हो सके। इसलिए विश्वासियों को अधिकारियों को वह सब कुछ देना चाहिए जिसकी उन्हें अच्छी तरह से अपना कार्य करने के लिए आवश्यकता होती है। इसमें सम्मान, आदर और कर शामिल हो सकते हैं।

पौलुस ने दिखाया कि सरकारें परमेश्वर की सेवा करने और सही काम करने के लिए जिम्मेदार हैं। उसने दृढ़ता से कहा कि कैसे परमेश्वर इस काम के लिए अगुवों और शासकों को नियुक्त करते हैं। उनका काम लोगों को गलत काम करने के लिए दंडित करना है। कुछ शासक उन लोगों को दंडित करते हैं जिन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है। ऐसा यीशु के साथ हुआ।

जब परमेश्वर की सन्तानों का अधिकारियों के साथ संघर्ष होता है, तो उन्हें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए। प्रेरितों के काम अध्याय 4 और 5 इस बारे में कहानी बताते हैं।

रोमियों 13:8–14

मूसा की व्यवस्था ने इस्राएल को जीवन जीने का तरीका दिखाया। जिस प्रकार का जीवन जीने का तरीका यीशु ने अपने अनुयायियों को सिखाया, वह नई व्यवस्था के समान है। यीशु की व्यवस्था या आज्ञा यह थी कि लोग एक-दूसरे से प्रेम करें (यूहन्ना 15:12)।

जब लोग दूसरों से प्रेम करते हैं, तो वे वही सब कर रहे होते हैं जो मूसा की व्यवस्था में आवश्यक किया था। विश्वासियों को यीशु के पृथ्वी पर लौटने की प्रतीक्षा करते हुए दूसरों के प्रति प्रेम दिखाना चाहिए।

पौलुस ने प्रतीक्षा के इस समय की तुलना सुबह नींद से जागने से की। यीशु का अनुसरण करने से पहले, रात का समय वह था जब लोग बुरे काम करते थे। दिन का समय वह है जब यीशु पृथ्वी पर लौटते हैं और लोग पूरी तरह से उनकी आज्ञा का पालन करते हैं।

पौलुस चाहते थे कि विश्वासी अभी से वैसे ही जीवन जीना शुरू करें जैसे वे यीशु के लौटने पर जीएँगे। पौलुस ने इसे इस तरह वर्णित किया जैसे कि वे यीशु को पहन रहे हों, जैसे वह उनके वस्त्र हों। इसका अर्थ है कि विश्वासियों को यीशु के करीब होना चाहिए जैसे वस्त्र उनकी त्वचा के करीब होते हैं। इसका यह भी अर्थ है कि अन्य लोग देख सकते हैं कि विश्वासी निष्ठापूर्वक यीशु का अनुसरण कर रहे हैं।

रोमियों 14:1–23

पौलुस ने रोम के विश्वासियों को याद दिलाया कि लोग अक्सर विभिन्न बातों पर अलग-अलग राय रखते हैं। यह उनके भोजन, पेय और पवित्र दिनों की समझ के बारे में भी सच था।

पौलुस ने उन्हें उन लोगों के साथ शांति से रहने के निर्देश दिए जिनकी राय अलग हो। उन्हें अपने मतभेदों पर बहस नहीं करनी चाहिए। उन्हें दूसरों से अधिक महत्वपूर्ण दिखने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। उन्हें एक-दूसरे के विश्वास की रक्षा करनी चाहिए और उसे मजबूत बनाने के लिए प्रोत्साहित

करना चाहिए। उन्हें शांति से रहना चाहिए और आभारी और आनंदित रहना चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि विश्वासियों को यीशु की तरह दूसरों की सेवा और प्रेम करना जारी रखना चाहिए। विश्वासी परमेश्वर की सेवा अपने प्रभु और स्वामी के रूप में करते हैं। परमेश्वर सभी लोगों के न्यायाधीश हैं। इसलिए विश्वासियों को यह आंकने की कोशिश नहीं करनी चाहिए कि दूसरे लोग परमेश्वर के प्रति कितने वफादार हैं।

रोमियों 15:1–16

पौलुस ने यह निर्देश देना जारी रखा कि कैसे विश्वासी एक-दूसरे के साथ शांति से रह सकते हैं। उन्हें एक-दूसरे के साथ उसी तरह व्यवहार करना चाहिए जैसे यीशु ने पृथ्वी पर लोगों के साथ किया था। यीशु ने केवल वही नहीं किया जो उनके लिए अच्छा था। इसके बजाय, उसने वही किया जो दूसरों के लिए अच्छा था।

उसने दूसरों को स्वीकार किया और सेवक बने। जब यीशु ने लोगों की सेवा की, तो इससे उन्हें परमेश्वर के बारे में सीखने का अवसर मिला। यीशु ने दिखाया कि परमेश्वर वास्तविक हैं और उन पर पूरी तरह से भरोसा किया जा सकता है।

परमेश्वर आशा का परमेश्वर है। वे दया से परिपूर्ण हैं और चाहते हैं कि उनके लोग अपने विश्वास में दृढ़ रहें। पौलुस ने परमेश्वर के लोगों के लिए प्रार्थना की कि वे आनंद और शांति से परिपूर्ण हो जाएँ। पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों को आशा से भर देता है। वे भी पवित्र शास्त्र पढ़ते समय आनंद और आशा पाते हैं।

पौलुस ने दिखाया कि परमेश्वर ने इस्राएल से जो प्रतिज्ञाएँ की थी, उनमें सभी जातियों के लिए आशीषें शामिल थीं। परमेश्वर की दया, आनन्द, आशा और शान्ति उन सभी लोगों के लिए हैं जो उन पर विश्वास करते हैं। विश्वासी एक दूसरे से बहुत भिन्न हो सकते हैं। फिर भी परमेश्वर को महिमा देना उन्हें एक करता है।

रोमियों 15:17–33

अपने पत्र के अंत में पौलुस ने उस कार्य के बारे में लिखा जो वह कर रहा था।। वह इस बात के लिए आभारी था कि मसीह ने उनके माध्यम से क्या किया था। परमेश्वर की आत्मा ही उन्हें उनके कार्य को करने की शक्ति दे रही थी।

पौलुस का कार्य यीशु के बारे में सुसमाचार साझा करना था। पौलुस ने इसे उन लोगों के साथ साझा किया जिन्होंने इसे पहले कभी नहीं सुना था। उसने येरूशलेम के आसपास रोमी सरकार द्वारा नियंत्रित देश पर ऐसा किया था।

अब वे स्पेन में प्रचार करना चाहता था। उसकी योजना स्पेन जाते समय रोम में विश्वासियों से मिलने की थी। वे इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि वे एक-दूसरे को कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं।

परन्तु पहले उसे यरूशलेम जाना था। वह गैर-यहूदी विश्वासियों से यहूदी विश्वासियों के लिए धन का उपहार ले जा रहा था जो वहाँ जरूरतमंद थे। प्रेरितों के काम अध्याय 21 से 28 में बताया गया है कि क्या हुआ। पौलुस को यरूशलेम में बंदीगृह में डाल दिया गया था। वह रोम और स्पेन की यात्रा नहीं कर सका जैसा उसने योजना बनाई थी। फिर भी कुछ वर्षों बाद उसे कैदी के रूप में रोम भेजा गया। तभी उसे रोम में विश्वासियों से मिलने का अवसर मिला।

रोमियों 16:1–15

पौलुस ने अपने कई मित्रों और उन लोगों के नामों का उल्लेख किया जो उनके साथ काम करते थे। इन नामों में से कई नाम प्रेरितों के काम की पुस्तक और पौलुस की पत्रियों में भी पाए जाते हैं।

यह सूची बताती है कि यीशु के बारे में संदेश कैसे फैला। इस सूची में शिक्षक, प्रेरित और वे लोग शामिल हैं जिन्होंने दूसरों का अपने घर में स्वागत किया।

सूची में महिलाओं और पुरुषों और यहूदियों और अन्यजातियों का उल्लेख है। इसमें भाई, बहनें, माताएँ और पूरे परिवार शामिल हैं। उन्होंने एक साथ कष्ट सहे थे और कुछ ने एक साथ बंदीगृह में समय बिताया था।

कई अलग-अलग लोगों ने साझेदारों और मित्रों के रूप में मिलकर सुसमाचार साझा किया। इन बहुत अलग-अलग लोगों के समूह ने मसीह की देह के रूप में संसार की सेवा की।

रोमियों 16:16–27

पौलुस के अंतिम शब्दों में रोम के विश्वासियों के लिए उनके कुछ सहायकों की ओर से अभिवादन शामिल थे।

उसने विश्वासियों को प्रोत्साहित किया कि वे उन लोगों से दूर रहें जो जानबूझकर समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। ये लोग विश्वासियों को शांतिपूर्वक रहने से रोकना चाहते थे।

उन्हें हर ऐसी शिक्षाओं से दूर रहना चाहिए जो यीशु के विषय में संदेश के विरुद्ध जाती थीं। पौलुस ने यीशु के संदेश को रहस्य कहा। अन्य पत्रियों में पौलुस ने इसे मसीह का रहस्य कहा है। यह गुप्त रहस्य था परन्तु अब स्पष्ट कर दिया गया है।

परमेश्वर ने इस रहस्य को इस्राएल के पवित्रशास्त्रों के माध्यम से स्पष्ट किया। इसका प्रचार पौलुस और अन्य लोगों ने किया

रोमियों *16:16–27*

था जो मसीह की सेवा ईमानदारी से करते थे। परमेश्वर चाहते हैं कि सभी लोग उन पर विश्वास करें और उनकी आज्ञा का पालन करें।

जब वे ऐसा करते हैं, तो उनका बुराई से कोई संबंध नहीं होता। इसके बजाय, वे परमेश्वर की शान्ति और अनुग्रह से भर जाते हैं। यह परमेश्वर की महिमा को बढ़ाता है।